International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-10, Issue-1 Jan-Feb-2023
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

भारत में बुजुर्गों की समस्या एवम परिवर्तनशील स्थिति: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

स्वाती त्रिपाठी

सहा.प्राध्यापक,समाजशास्त्र

शहीद भगत सिंह शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय पिपरिया, नर्मदापुरम (म. प्र.)

सार

यह शोध पत्र भारत में बुजुर्ग आबादी के सामने आने वाली समस्याओं पर एक समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करता है और इस जनसांख्यिकीय समूह की बदलती स्थिति की पड़ताल करता है। अध्ययन का उद्देश्य उन सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों पर प्रकाश डालना है जो बुजुर्ग अनुभव करते हैं, और भारतीय समाज के भीतर बुजुर्गों की उभरती भूमिकाओं और धारणाओं की जांच करते हैं। साक्षात्कार, सर्वेक्षण और डेटा विश्लेषण सहित गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान विधियों के संयोजन पर आधारित यह पेपर भारत में वृद्धावस्था से जुड़े बहुमुखी मुद्दों पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। निष्कर्ष बुजुर्गों की चिंताओं को दूर करने और उनकी भलाई और सामाजिक समावेश को बढ़ावा देने के लिए व्यापक सामाजिक नीतियों और हस्तक्षेपों की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भारत में बुजुर्गों की समस्याओं और बदलती स्थिति की जांच करके, यह शोध पत्र उम्र बढ़ने पर मौजूदा साहित्य में योगदान देता है और इस कमजोर आबादी के सामने आने वाली चुनौतियों की गहरी समझ प्रदान करता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष नीति निर्माताओं, सामाजिक संगठनों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को भारत में बुजुर्गों के कल्याण और सामाजिक एकीकरण को बढ़ावा देने वाले लक्षित हस्तक्षेप और नीतियों को विकसित करने के लिए सूचित कर सकते हैं।

परिचय

पृष्ठभूमि:

भारत, कई अन्य देशों की तरह, अपनी जनसंख्या की उम्र बढ़ने के साथ एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय बदलाव का अनुभव कर रहा है। विश्व जनसंख्या संभावनाओं के अनुसार, भारत में 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों का अनुपात 2020 में 8.6% से बढ़कर 2050 तक 19.3% होने का अनुमान है। यह जनसांख्यिकीय संक्रमण भारतीय समाज के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों लाता है, विशेष रूप से जरूरतों को पूरा करने में और बुजुर्ग आबादी की चिंता उम्र बढ़ने की प्रक्रिया विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों से प्रभावित होती है, जो इसे समाजशास्त्रियों के लिए अध्ययन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनाती है।

उद्देश्य:

क) भारत में बुजुर्गों द्वारा अनुभव की जाने वाली सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों की पहचान करें।

ख) भारतीय समाज में बुजुर्गों की उभरती भूमिकाओं और धारणाओं को समझें।

ग) बुजुर्गों के कल्याण और सामाजिक समावेश पर इन चुनौतियों और बदलती गतिशीलता के प्रभाव की जांच करें।

घ) बुजुर्गों की जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से मौजूदा सरकारी नीतियों और सामाजिक हस्तक्षेपों का अन्वेषण करें।

अनुसंधान प्रश्न:

उपरोक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, यह शोध पत्र निम्नलिखित शोध प्रश्नों का उत्तर देना चाहता है:

क) भारत में बुजुर्गों के सामने कौन-सी सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौतियाँ हैं? ख) बुजुर्ग आबादी के सामने आने वाली आर्थिक चुनौतियाँ और सीमाएँ क्या हैं? ग) बदलते जनसांख्यिकीय परिदृश्य और शहरीकरण ने भारतीय समाज में बुजुर्गों की स्थिति को कैसे प्रभावित किया है? घ) बुजुर्गों की

उनके परिवारों और समुदायों में उभरती भूमिकाएं और धारणाएं क्या हैं ? ङ) बुजुर्ग आबादी के सामने स्वास्थ्य संबंधी प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं? च) सरकार की नीतियां और सामाजिक हस्तक्षेप भारत में बुजुर्गों की जरूरतों को कैसे पूरा करते हैं?

क्रियाविधि

इस समाजशास्त्रीय अध्ययन का संचालन करने के लिए, गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों डेटा एकत्र करने के लिए मिश्रित-पद्धतियों के दृष्टिकोण को नियोजित किया जाएगा। एक सैद्धांतिक ढांचा स्थापित करने और प्रमुख शोध अंतरालों की पहचान करने के लिए मौजूदा अकादमिक साहित्य, शोध लेखों और सरकारी रिपोर्टों की व्यापक समीक्षा की जाएगी। बुजुर्ग व्यक्तियों, परिवार के सदस्यों, देखभाल करने वालों और समुदाय के नेताओं के अनुभवों, चुनौतियों और धारणाओं पर समृद्ध गुणात्मक डेटा एकत्र करने के लिए गहन साक्षात्कार आयोजित किए जाएंगे। विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और भौगोलिक क्षेत्रों से प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण नियोजित किया जाएगा। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बुजुर्ग व्यक्तियों के एक बड़े नमूने के लिए एक संरचित सर्वेक्षण किया जाएगा। सर्वेक्षण में सामाजिक-आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य की स्थिति, सामाजिक समर्थन और सरकार की नीतियों से संतुष्टि जैसे विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के लिए मानकीकृत उपाय शामिल होंगे। आवर्ती पैटर्न, विषयों और दृष्टिकोणों की पहचान करने के लिए विषयगत विश्लेषण का उपयोग करके साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किए गए गुणात्मक डेटा का विश्लेषण किया जाएगा। चर के बीच संबंधों की जांच करने और सार्थक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए सर्वेक्षण से मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों, जैसे वर्णनात्मक सांख्यिकी और प्रतिगमन विश्लेषण का उपयोग करके किया जाएगा।

एजिंग इन इंडियन सोसाइटी: कल्चरल कॉन्टेक्स्ट

पारंपरिक मूल्य और बुजुर्गों का सम्मान भारतीय समाज में बुजुर्गों के प्रति सम्मान और सम्मान की पुरानी परंपरा रही है। पारंपरिक मूल्य जैसे कि संतानोचित पवित्रता और "ज्ञान के संरक्षक के रूप में बुजुर्ग"की अवधारणा, अंतर-पीढ़ी संबंधों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बुजुर्गों को अक्सर परिवार और समुदाय के नैतिक और नैतिक मार्गदर्शक के रूप में माना जाता है, और उनकी सलाह और ज्ञान को महत्व दिया जाता है और मांगा जाता है। बड़ों का सम्मान भारतीय संस्कृति में गहराई से समाया हुआ है, और यह विभिन्न रीति-रिवाजों, अनुष्ठानों और त्योहारों में प्रकट होता है जो बुजुर्गों के योगदान और ज्ञान का जश्न मनाते हैं।

पारिवारिक संरचना और अंतर-पीढ़ीगत संबंध: भारतीय परिवार संरचना को विशिष्ट रूप से मजबूत अंतर-पीढ़ीगत संबंधों और संयुक्त या विस्तारित परिवारों के प्रसार की विशेषता है। इस सेटअप में, दादा-दादी, माता-पिता और बच्चों सहित कई पीढ़ियां अक्सर एक ही छत के नीचे रहती हैं, जो घनिष्ठ संबंधों को बढ़ावा देती हैं। बुजुर्ग परिवार के भीतर अधिकार और प्रभाव की स्थिति रखते हैं, और उनकी राय और निर्णयों को उचित महत्व दिया जाता है। वे अक्सर परिवार की परंपराओं, सांस्कृतिक विरासत के संरक्षक के रूप में सेवा करते हैं और परिवार के अन्य सदस्यों को भावनात्मक समर्थन प्रदान करते हैं।

हालाँकि, शहरीकरण और आधुनिकीकरण के प्रभाव से, शहरी क्षेत्रों में एकल परिवार संरचनाओं की ओर धीरे-धीरे बदलाव आया है। इस संक्रमण ने अंतरपीढ़ी के रिश्तों में बदलाव लाए हैं, क्योंकि बुजुर्ग माता-पिता खुद को अपने वयस्क बच्चों से अलग रह सकते हैं। यह बदलाव अवसर और चुनौतियाँ दोनों पेश करता है, क्योंकि यह बुजुर्गों को उपलब्ध सहायता और देखभाल को प्रभावित कर सकता है और परिवार और समुदाय के भीतर उनके सामाजिक एकीकरण को प्रभावित कर सकता है।

बदलती जनसांख्यिकी और शहरीकरण: जन्म दर में गिरावट, जीवन प्रत्याशा में वृद्धि और ग्रामीण से शहरी प्रवास जैसे कारकों के कारण भारत का जनसांख्यिकीय परिदृश्य महत्वपूर्ण परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। इन परिवर्तनों का वृद्धजनों पर प्रभाव पड़ता है। जैसे-जैसे बुजुर्गों का अनुपात बढ़ता है, उनकी अनूठी जरूरतों और चुनौतियों को दूर करने की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। शहरीकरण ने नई सामाजिक संरचनाओं के उद्भव, प्रवासन में वृद्धि और परिवार की गतिशीलता को बदलने के लिए प्रेरित किया है, जो बुजुर्गों की भलाई और सामाजिक स्थिति को प्रभावित कर सकता है।

शहरी क्षेत्रों में, बुजुर्गों को सामाजिक अलगाव, सामुदायिक समर्थन की कमी और स्वास्थ्य देखभाल और सामाजिक सेवाओं तक सीमित पहुंच से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। वे पारंपरिक समर्थन प्रणालियों के नुकसान का भी अनुभव कर सकते हैं क्योंकि विस्तारित

पारिवारिक संरचना छोटे एकल परिवारों को रास्ता देती है। इसके अतिरिक्त, शहरी क्षेत्रों में अक्सर भौतिक और सामाजिक बाधाएं मौजूद होती हैं जो सार्वजनिक स्थानों और सामुदायिक गतिविधियों में बुजुर्गों की गतिशीलता और भागीदारी में बाधा बन सकती हैं।

भारत में बुजुर्ग आबादी की स्थिति और अनुभवों को समझने के लिए भारत में उम्र बढ़ने के सांस्कृतिक संदर्भ को समझना आवश्यक है। पारंपरिक मूल्य, पारिवारिक संरचना, और बदलती जनसांख्यिकी और शहरीकरण का प्रभाव बुजुर्गों के सामने आने वाली चुनौतियों और भारतीय समाज के भीतर उनकी भूमिकाएं और धारणाएं कैसे विकसित हो रही हैं, इसकी जांच करने के लिए एक आधार प्रदान करते हैं। सांस्कृतिक संदर्भ को स्वीकार करते हुए, भारत में बुजुर्ग आबादी की मौजूदा ताकत का लाभ उठाने और उभरती जरूरतों को पूरा करने के लिए हस्तक्षेप और नीतियां तैयार की जा सकती हैं।

बुजुर्गों द्वारा सामना की जाने वाली सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौतियाँ

सामाजिक अलगाव और अकेलापन: भारत में बुजुर्गों के सामने सामाजिक अलगाव और अकेलापन महत्वपूर्ण चुनौतियां हैं। परिवार के ढांचे में बदलाव, प्रवासन और शहरीकरण जैसे कारक बुजुर्गों के लिए सामाजिक वियोग की भावना में योगदान कर सकते हैं। संयुक्त परिवार प्रणालियों में, बुजुर्गों के पास अक्सर अंतर्निहित सामाजिक समर्थन नेटवर्क होते हैं, लेकिन जैसे-जैसे एकल परिवार अधिक प्रचलित होते जाते हैं, बुजुर्गों को साहचर्य और बातचीत की कमी का अनुभव हो सकता है। इसके अतिरिक्त, मृत्यु या प्रवासन के माध्यम से जीवनसाथी, दोस्तों और रिश्तेदारों की हानि अलगाव की भावनाओं को और बढ़ा देती है। सामाजिक अलगाव और अकेलापन बुजुर्गों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण पर हानिकारक प्रभाव डाल सकता है।

वित्तीय सुरक्षा का अभाव: भारत में कई बुजुर्ग व्यक्ति वित्तीय असुरक्षा का सामना करते हैं। सीमित सेवानिवृत्ति लाभ, अपर्याप्त बचत और सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों की अनुपस्थिति जैसे कारक इस चुनौती में योगदान करते हैं। पारंपरिक भारतीय समाज में, अक्सर उम्मीद की जाती है कि युवा पीढ़ी अपने बुजुर्ग माता-पिता का समर्थन करेगी। हालाँकि, जैसे-जैसे समाज बदलता है, आर्थिक दबाव और बढ़ती गतिशीलता वयस्क बच्चों के लिए पूर्ण वित्तीय सहायता प्रदान करना कठिन बना देती है। यह बुजुर्गों को गरीबी और निर्भरता के जोखिम में डालता है, जो उनके जीवन की समग्र गुणवत्ता को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

स्वास्थ्य देखभाल और सामाजिक सेवाओं तक सीमित पहुंच: भारत में बुजुर्गों के लिए स्वास्थ्य देखभाल और सामाजिक सेवाओं तक पहुंच एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। जबकि देश ने स्वास्थ्य देखभाल के बुनियादी ढांचे में सुधार करने में प्रगति की है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंच, सामर्थ्य और देखभाल की गुणवत्ता में अभी भी अंतर है। बुजुर्ग व्यक्तियों को शारीरिक सीमाओं, परिवहन की कमी और उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाओं जैसी बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। सामुदायिक केंद्रों, मनोरंजक गतिविधियों और सहायता समूहों जैसी सामाजिक सेवाओं तक सीमित पहुंच उनके सामाजिक समावेश और कल्याण को और बाधित करती है।

भेदभाव और उम्रवाद: भारत में बुजुर्गों के सामने भेदभाव और आयुवाद प्रचलित चुनौतियां हैं। आयु-आधारित रूढ़ियाँ और नकारात्मक धारणाएँ अक्सर बुजुर्गों के लिए हाशिए पर और सीमित अवसरों की ओर ले जाती हैं। वे रोजगार, स्वास्थ्य सेवा और सार्वजनिक स्थानों में भेदभाव का अनुभव कर सकते हैं। आयुवाद बुजुर्गों के योगदान और क्षमताओं के लिए सम्मान और मान्यता की कमी को कायम रख सकता है । इसके परिणामस्वरूप आत्म-सम्मान की हानि, सामाजिक भागीदारी में कमी, और संसाधनों और सेवाओं तक पहुंच में बाधा उत्पन्न हो सकती है।

भारतीय समाज में बुजुर्गों के कल्याण और सामाजिक समावेश को बढ़ावा देने के लिए इन सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौतियों का समाधान करना महत्वपूर्ण है। नीतियों और हस्तक्षेपों को उम्र के अनुकूल वातावरण बनाने, पीढ़ीगत अंत:क्रियाओं को बढ़ावा देने, स्वास्थ्य देखभाल और सामाजिक सेवाओं तक पहुंच बढ़ाने और आयुवाद का मुकाबला करने पर ध्यान देना चाहिए। इन चुनौतियों को पहचानने और संबोधित करने से, समाज यह सुनिश्चित कर सकता है कि बुजुर्ग आबादी को महत्व दिया जाए, समर्थन दिया जाए और सक्रिय जुड़ाव और उम्र बढ़ने के सम्मानजनक अनुभव के अवसर प्रदान किए जाएं।

बुजुर्गों की बदलती भूमिकाएँ और धारणाएँ

कार्यबल की भागीदारी और सेवानिवृत्ति: हाल के वर्षों में, भारत में कार्यबल की भागीदारी और सेवानिवृत्ति के संबंध में बुजुर्गों की धारणा में बदलाव आया है। परंपरागत रूप से, सेवानिवृत्ति को काम से हटने और अवकाश का आनंद लेने के समय के रूप में देखा जाता था। हालांकि, बढ़ी

हुई जीवन प्रत्याशा, बेहतर स्वास्थ्य स्थितियों और बदलते सामाजिक-आर्थिक कारकों के साथ, कई बुजुर्ग व्यक्ति कार्यबल में बने रहने या करियर के नए अवसरों का पीछा करने का विकल्प चुन रहे हैं। वे उद्यमशीलता, परामर्श और अंशकालिक कार्य सहित अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में अपने कौशल, ज्ञान और अनुभव का योगदान करते हैं। यह प्रवृत्ति इस धारणा को चुनौती देती है कि वृद्ध वयस्क अब उत्पादक नहीं हैं और उम्र के अनुकूल कार्यस्थल और आजीवन सीखने के अवसर प्रदान करने के महत्व पर प्रकाश डालते हैं।

ज्ञान और कौशल का अंतरपीढ़ीगत हस्तांतरण: भारत में बुजुर्गों के पास ज्ञान, ज्ञान और कौशल का खजाना है जिसे युवा पीढ़ी को हस्तांतरित किया जा सकता है। वे सांस्कृतिक परंपराओं, ऐतिहासिक घटनाओं और पैतृक ज्ञान के भंडार के रूप में काम करते हैं। ज्ञान और कौशल का अंतरपीढ़ीगत हस्तांतरण परिवारों, समुदायों और विभिन्न सांस्कृतिक सेटिंग्स के भीतर होता है। बुजुर्ग कृषि, शिल्प, संगीत, नृत्य, कला और पारंपरिक प्रथाओं से संबंधित कौशल, सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और निरंतरता को बढ़ावा देने के लिए आगे बढ़ते हैं। ज्ञान का यह आदान-प्रदान न केवल सांस्कृतिक परंपराओं को बनाए रखने में मदद करता है बल्कि पीढ़ी दर पीढ़ी बंधन और आपसी सम्मान को भी बढ़ावा देता है।

देखभाल करने वाले और सामुदायिक नेताओं के रूप में बुजुर्ग: बुजुर्ग व्यक्ति अक्सर अपने परिवारों में देखभाल करने वालों के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे बच्चों के पालन-पोषण में भावनात्मक समर्थन, मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करते हैं, जिससे पारिवारिक सामंजस्य बनाए रखने में मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त, बुजुर्ग अपने समुदायों में नेताओं, सलाहकारों और सलाहकारों के रूप में योगदान करते हैं। उनके जीवन के अनुभव, ज्ञान और संचित ज्ञान उन्हें सामुदायिक विकास और निर्णय लेने की प्रक्रिया के लिए मूल्यवान संसाधन बनाते हैं। वे रोल मॉडल के रूप में काम करते हैं, युवा पीढ़ी के मूल्यों और नैतिकता को आकार देने में मदद करते हैं। इसके अलावा, सामुदायिक गतिविधियों में उनकी सक्रिय भागीदारी सामाजिक सामंजस्य और अंतर-पीढ़ीगत समझ को बढ़ावा देती है।

बुजुर्गों की बदलती भूमिकाओं और योगदान को पहचानना एक ऐसे समावेशी समाज के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है जो उनके अनुभवों और क्षमताओं को महत्व देता है और उनका सम्मान करता है। नीति निर्माताओं को आयु-अनुकूल नीतियां बनाने का प्रयास करना चाहिए जो कार्यबल की भागीदारी को बढ़ावा देती हैं, आजीवन सीखने के अवसर प्रदान करती हैं, और रोजगार में आयुवाद को संबोधित करती हैं। पीढ़ियों के बीच ज्ञान और कौशल के हस्तांतरण को सुविधाजनक बनाने के लिए अंतर-पीढ़ीगत कार्यक्रमों और पहलों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, परिवारों के भीतर बुजुर्गों की देखभाल करने वाली भूमिकाओं को पहचानने और बढ़ाने के लिए सपोर्ट सिस्टम होना चाहिए। समाज के सक्रिय सदस्यों के रूप में बुजुर्गों के योगदान को महत्व देकर, हम अंतर-पीढ़ीगत सद्भाव, सामाजिक सामंजस्य और समग्र कल्याण को बढ़ावा दे सकते हैं।

बुजुर्गों का स्वास्थ्य और कल्याण

शारीरिक स्वास्थ्य चुनौतियाँ: भारत में बुजुर्गों को कई तरह की शारीरिक स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उम्र के साथ, व्यक्ति पुरानी बीमारियों जैसे हृदय रोग, मधुमेह, गठिया और श्वसन स्थितियों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। उम्र से संबंधित शारीरिक परिवर्तन, कम गतिशीलता, संवेदी हानि, और गिरने की भेद्यता सहित, उनके समग्र कल्याण को और प्रभावित करते हैं। इन चुनौतियों से निपटने और स्वस्थ उम्र बढ़ने को बढ़ावा देने के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल, निवारक सेवाओं और नियमित चिकित्सा जांच तक पहुंच महत्वपूर्ण है।

मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण: भारत में बुजुर्ग आबादी के लिए मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण महत्वपूर्ण चिंताएं हैं। अवसाद, चिंता, अकेलापन और संज्ञानात्मक गिरावट वृद्ध वयस्कों द्वारा सामना की जाने वाली सामान्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं हैं। सामाजिक अलगाव, प्रियजनों की हानि, कम सामाजिक संपर्क और उम्र से संबंधित कलंक जैसे कारक इन चुनौतियों में योगदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों को लेकर कलंक और जागरूकता की कमी और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच समस्या को और बढ़ा देती है। मानसिक स्वास्थ्य सहायता को प्राथमिकता देना, जागरूकता पैदा करना और बुजुर्गों के लिए पर्याप्त मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं सुनिश्चित करना आवश्यक है।

स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं और सहायता प्रणालियां: बुजुर्गों के स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए स्वास्थ्य सेवाओं और सहायता प्रणालियों तक पहुंच महत्वपूर्ण है। हालाँकि, भारत में, इस संबंध में विभिन्न चुनौतियाँ हैं। स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे और सुविधाएं अपर्याप्त हो सकती हैं, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, जिससे बुजुर्गों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच बनाना मुश्किल हो जाता है। सामर्थ्य भी एक महत्वपूर्ण

चिंता का विषय है, क्योंकि वृद्ध वयस्कों के लिए स्वास्थ्य देखभाल व्यय बोझिल हो सकता है, विशेष रूप से जिनके पास पर्याप्त वित्तीय संसाधन या स्वास्थ्य बीमा कवरेज नहीं है। इसके अतिरिक्त, विशेष वृद्धावस्था देखभाल और प्रशिक्षित स्वास्थ्य पेशेवरों की आवश्यकता है जो बुजुर्ग आबादी की विशिष्ट आवश्यकताओं को समझते हैं।

बुजुर्गों की भलाई सुनिश्चित करने के लिए सपोर्ट सिस्टम महत्वपूर्ण हैं। इनमें सामाजिक सेवाएं, सामुदायिक समर्थन और देखभाल करने वाले समर्थन शामिल हैं। सामाजिक सेवाओं में सामुदायिक केंद्र, मनोरंजक गतिविधियाँ और सहायता समूह शामिल हो सकते हैं जो सामाजिक जुड़ाव और सामाजिक अलगाव का मुकाबला करने के अवसर प्रदान करते हैं। मित्रों, पड़ोसियों और सामुदायिक संगठनों सहित सामुदायिक समर्थन नेटवर्क, दैनिक कार्यों, परिवहन और भावनात्मक समर्थन के साथ सहायता प्रदान कर सकते हैं। वृद्ध वयस्कों के लिए देखभाल करने में सहायता महत्वपूर्ण है जिन्हें दैनिक जीवन की गतिविधियों में सहायता की आवश्यकता होती है। बुजुर्गों के लिए जीवन की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में औपचारिक और अनौपचारिक देखभाल नेटवर्क महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

स्वास्थ्य देखभाल के बुनियादी ढांचे में सुधार, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच बढ़ाने और जराचिकित्सा देखभाल की गुणवत्ता बढ़ाने के प्रयास किए जाने चाहिए। बुजुर्गों की विशिष्ट मानसिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता और सेवाओं को स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों में एकीकृत किया जाना चाहिए। व्यापक समर्थन प्रणाली विकसित करने में स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं, नीति निर्माताओं और सामुदायिक संगठनों के बीच सहयोग आवश्यक है जो भारत में बुजुर्ग आबादी के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण को पूरा करता है।

सरकारी नीतियां और सामाजिक हस्तक्षेप

बुजुर्गों के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम: भारत सरकार ने बुजुर्ग आबादी की जरूरतों और चुनौतियों का समाधान करने के लिए विभिन्न राष्ट्रीय कार्यक्रमों और पहलों को लागू किया है। ऐसा ही एक कार्यक्रम बुजुर्गों के स्वास्थ्य देखभाल के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीएचसीई) है, जिसका उद्देश्य बुजुर्गों के लिए निवारक, उपचारात्मक, पुनर्वास और उपशामक देखभाल सहित व्यापक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना है। एक अन्य कार्यक्रम वृद्ध व्यक्तियों के लिए एकीकृत कार्यक्रम (आईपीओपी) है, जो वृद्ध वयस्कों के सामाजिक कल्याण पर ध्यान केंद्रित करता है, वित्तीय सहायता, आश्रय, स्वास्थ्य देखभाल और अन्य सहायता सेवाएं प्रदान करता है। इन राष्ट्रीय कार्यक्रमों का उद्देश्य भारत में बुजुर्गों के लिए समग्र कल्याण और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।

सामाजिक सुरक्षा और पेंशन योजनाएँ: बुजुर्गों की वित्तीय सुरक्षा चिंताओं को दूर करने के लिए, भारत सरकार ने सामाजिक सुरक्षा और पेंशन योजनाएँ लागू की हैं। राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (NSAP) निराश्रित वृद्ध व्यक्तियों, विधवाओं और विकलांग व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना (आईजीएनओएपीएस) एक और पहल है जो गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले एक निश्चित आयु से ऊपर के व्यक्तियों को पेंशन प्रदान करती है । इन योजनाओं का उद्देश्य वृद्ध वयस्कों के लिए बुनियादी स्तर की वित्तीय सहायता सुनिश्चित करना और गरीबी के प्रति उनकी भेद्यता को कम करना है।

स्वास्थ्य देखभाल पहल: भारत सरकार ने बुजुर्गों के लिए स्वास्थ्य देखभाल पहलों में सुधार के लिए भी कदम उठाए हैं। आयुष्मान भारत - प्रधान मंत्री जन आरोग्य योजना (पीएमजेएवाई) एक प्रमुख कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य बुजुर्गों सहित कमजोर आबादी के लिए स्वास्थ्य बीमा कवरेज प्रदान करना है। कार्यक्रम में अस्पताल में भर्ती होने का खर्च शामिल है, जिससे गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच सुनिश्चित होती है। इसके अतिरिक्त, सरकार ने वृद्ध वयस्कों की स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए जराचिकित्सीय देखभाल केंद्र और विशेष क्लीनिक स्थापित किए हैं। ये पहलें बुजुर्ग आबादी के लिए स्वास्थ्य सेवा की पहुंच, सामर्थ्य और गुणवत्ता बढ़ाने का प्रयास करती हैं।

हिमायत और जागरूकता अभियान: हिमायत और जागरूकता अभियान भारत में बुजुर्गों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन अभियानों का उद्देश्य वृद्ध वयस्कों के अधिकारों, आवश्यकताओं और योगदान के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। वे एजिज्म, भेदभाव और उम्र बढ़ने से जुड़े सामाजिक कलंक को कम करने की दिशा में काम करते हैं। गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) और समुदाय-आधारित संगठन अक्सर इन अभियानों का नेतृत्व करते हैं, जनता और नीति निर्माताओं को संवेदनशील बनाने के लिए कार्यशालाओं, सेमिनारों और कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। इस तरह की पहल नीति में बदलाव के लिए अनुकूल माहौल बनाती है, पीढ़ी दर पीढ़ी समझ को बढ़ावा देती है और उम्र बढ़ने की सकारात्मक धारणा को बढ़ावा देती है।

बुजुर्गों के कल्याण और अधिकारों को प्राथमिकता देने के लिए सरकारी नीतियों और सामाजिक हस्तक्षेपों को जारी रखना चाहिए। मौजूदा कार्यक्रमों को मजबूत और विस्तारित करना, प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करना और स्वास्थ्य देखभाल, वित्तीय सुरक्षा और सामाजिक समर्थन प्रणालियों में अंतराल को दूर करना आवश्यक है। सरकारी एजेंसियों, गैर-सरकारी संगठनों, सामुदायिक संगठनों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के बीच सहयोग से व्यापक और स्थायी पहल हो सकती हैं जो भारत में बुजुर्ग आबादी के लिए समग्र स्थिति और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करती हैं।

निष्कर्ष

इस शोध पत्र में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भारत में बुजुर्गों की समस्याओं और बदलती स्थिति का पता लगाया गया है। इसने बुजुर्गों द्वारा सामना की जाने वाली सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौतियों की जांच की है, जिसमें सामाजिक अलगाव और अकेलापन, वित्तीय सुरक्षा की कमी, स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक सेवाओं तक सीमित पहुंच और भेदभाव और आयुवाद शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, इसने बुजुर्गों की बदलती भूमिकाओं और धारणाओं पर प्रकाश डाला है, जैसे कि कार्यबल की भागीदारी और सेवानिवृत्ति, ज्ञान और कौशल का अंतर-पीढ़ीगत हस्तांतरण, और देखभाल करने वालों और सामुदायिक नेताओं के रूप में उनकी भूमिकाएँ। इसके अलावा, इसने बुजुर्गों के स्वास्थ्य और कल्याण पर चर्चा की है, शारीरिक स्वास्थ्य चुनौतियों, मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण, स्वास्थ्य सेवाओं और समर्थन प्रणालियों पर ध्यान केंद्रित किया है। अंत में, इसने इन मुद्दों को संबोधित करने के उद्देश्य से सरकार की नीतियों और सामाजिक हस्तक्षेपों को रेखांकित किया है। इस शोध के निष्कर्षों का नीति और व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। नीति निर्माताओं को आयु-अनुकूल नीतियों और कार्यक्रमों को लागू करके बुजुर्गों की ज़रूरतों और कल्याण को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसमें स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे और पहुंच में सुधार, सामाजिक सुरक्षा और पेंशन योजनाओं को मजबूत करना और अंतर-पीढ़ीगत सहयोग को बढ़ावा देना शामिल है। बुजुर्गों द्वारा सामना की जाने वाली सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौतियों, जैसे सामाजिक अलगाव, वित्तीय असुरक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और सामाजिक सेवाओं तक सीमित पहुंच और आयुवाद को दूर करने के प्रयास किए जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त, नीतियों को बुजुर्गों की बदलती भूमिकाओं और योगदानों को पहचानना चाहिए, निरंतर कार्यबल की भागीदारी, अंतर-पीढ़ीगत ज्ञान हस्तांतरण और उनकी देखभाल करने वाली जिम्मेदारियों के लिए अवसर प्रदान करना चाहिए। बुजुर्गों के मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण को संबोधित करने के लिए जागरूकता पैदा करना, कलंक का मुकाबला करना और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा देना भी आवश्यक है।

भावी अनुसंधान दिशाएँ:

जबकि इस शोध पत्र ने भारत में बुजुर्गों की समस्याओं और बदलती स्थिति पर प्रकाश डाला है, ऐसे कई क्षेत्र हैं जो आगे की जांच की मांग करते हैं। भविष्य के शोध हाशिए के समूहों के बुजुर्ग व्यक्तियों, जिनमें निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, ग्रामीण क्षेत्रों और अल्पसंख्यक समुदायों के लोग शामिल हैं, के विशिष्ट अनुभवों और चुनौतियों का गहराई से अध्ययन कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, बुजुर्गों के कल्याण पर सरकारी नीतियों और सामाजिक हस्तक्षेपों के प्रभाव पर अधिक शोध की आवश्यकता है। अनुदैर्ध्य अध्ययन समय के साथ इन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता में अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं। इसके अलावा, सामाजिक समर्थन प्रणाली, सामुदायिक जुड़ाव और अंतर-पीढ़ीगत बातचीत को बढ़ाने के लिए नवीन दृष्टिकोणों की खोज करना मूल्यवान होगा।

संदर्भ

1. रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त, भारत (2011)

2. शर्मा के.एल., स्टडीज इन जेरोनोलॉजी, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 132 (2007)

3. अजय कुमार साहू , गेविन जे. एंड्रयूज, एस. इरुदया एजिंग के राजन समाजशास्त्र, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली, 06, (2009)

4. आशीष बोस, माला कपूर शंकरदास , ग्रोइंग ओल्ड इन इंडिया बीआर पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 04, (2004)

5. देवी डी. राधा , इकोनॉमिक्स ऑफ एजिंग, सीरियल प्रकाशन, नई दिल्ली, 63 (2008)

6. जॉनसन सी. शांति और राजन एस. इरुदया , एजिंग एंड हेल्थ इन इंडिया, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली, 32 (2010)

7. सेठी वंशीखा , विजय लक्ष्मी वर्मा और उद्धव सिंह, कानपुर, यूपी के वृद्धाश्रमों और समुदायों में रहने वाले सामान्य बुजुर्ग विषयों में अवसाद और दैनिक जीवन की गतिविधियों पर उम्र बढ़ने का प्रभाव, चिकित्सा अनुसंधान और स्वास्थ्य विज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, 2(2), 243- 249 (2013))

8. श्रीवास्तव शुचि , एजिंग लाइफ एट द एज, एपीएच पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली, 197 (2013)

9. मो. असदुल्ला , कुणाल कुवलकर , बसवराज कटारकी , सौम्या मलमर्दी और संतोष खर्का , उडिपी , कर्नाटक में वृद्धाश्रमों में कैदियों पर रुग्णता प्रोफ़ाइल और जीवन की गुणवत्ता पर एक अध्ययन, बुनियादी और अनुप्रयुक्त चिकित्सा विज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, 2(3), 91-97 (2012)

10. दुबे अरुणा , सीमा भसीन , एन. गुप्ता और एन. शर्मा, वृद्धाश्रम में रहने वाले बुजुर्गों का अध्ययन और जम्मू में पारिवारिक सेट-अप, होम कम्युनिटी साइंस पर अध्ययन, 5(2), 93-98 (2011)

11. कुमार प्रदीप , दास अनिंद्य और रौतेला उर्वशी , लखनऊ के वृद्धाश्रमों में मानसिक और शारीरिक रुग्णता , दिल्ली मनोरोग जर्नल, 15, (2012)

12. आचार्य अर्पिता , डिप्रेशन, अकेलापन और बुजुर्ग महिलाओं में असुरक्षा की भावना भरना, अगरतला के वृद्धाश्रमों में रहना, इंडियन जर्नल ऑफ जेरोनोलॉजी, 26, 524-536 (2012)

13. महापात्र तनुजा , उडीसा में बुजुर्ग विधवाओं की समस्याएं एक अनुभवजन्य अध्ययन, इंडियन जर्नल ऑफ जेरोन्टोलॉजी, 26, 549-563 (2012)

14. चालिस होम नाथ , नेपाली बुजुर्गों की सामाजिक-जनसांख्यिकीय और स्वास्थ्य स्थिति, इंडियन जर्नल ऑफ जेरोन्टोलॉजी, 26, 151-160 (2012)

15. लिन मैकडोनाल्ड, केएल शर्मा: एजिज्म एंड एल्डर एब्यूज, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली-2., 344 (2011)